ISSN 0974-8857

तुलसी प्रज्ञा

TULSÍ PRAJÑÁ

वर्ष 42 • अंक 167-168 • जुलाई-दिसम्बर 2015

A Peer Reviewed Research Quarterly

जैन विश्वभारती संस्थान
लाडनूँ - 341 306 (राजस्थान) भारत
JAIN VISHVA BHARATI INSTITUTE
Ladnun - 341 306, Rajasthan, India

तुलसी प्रज्ञा ISSN 0974-8857

TULSI PRAJÑĀ

A Peer Reviewed Research Quarterly of Jain Vishva Bharati Institute

YEAR-42 VOL.-167-168 JULY-DECEMBER, 2015

अनुक्रमणिका / CONTENT

ENGLISH SECTION

Subject	Author	Page No.
Ācārāṅga-Bhāṣyam	Ācārya Mahāprajña	05-08
Non-violence: It's Different Aspects	Prof. B.R. Dugar	09-20
Tragedies in Sanskrit (Literature) Dramas: A Resume	Dr Chandramouli S. Naikar	21-26
Health and Happiness in Jainism	Dr. Samani Rohit Pragya	27-37
Use and Evolution of Languages in Jain Literature	Abhishek Jain	38-48
Veganism with Jainism : A Better Life for Everyone	Gabrial Mc Carty	49-62

हिन्दी खण्ड

विषय	लेखक	पृ. संख्या
उमास्वति और उनका तत्त्वार्थसूत्र	प्रो. सागरमल जैन	63-72
समाधिमरण के वैदिक पुराणगत उल्लेख	प्रो. दामोदर शास्त्री	73-83
तत्त्वार्थश्लोकवार्तिक में निर्विकल्पक प्रत्यक्ष एवं स्वसंवेदन प्रत्यक्ष	प्रो. धर्मचन्द जैन	84-95
अहिंसा का आध्यात्मिक एवं व्यावहारिक पक्ष : आचाराङ्ग के परिप्रेक्ष्य में	डॉ. समणी संगीत प्रज्ञा	96-109
शिक्षा के विकास में सम्यग् दर्शन की भूमिका : एक अध्ययन	डॉ. गिरधारीलाल शर्मा	110-114
आचार्य कुन्दकुन्द के आधार पर निश्चय और व्यवहार नय की समीक्षा	डॉ. आलोक कुमार जैन	115-125

अहिंसा का आध्यात्मिक एवं व्यावहारिक पक्ष : आचारांग के परिप्रेक्ष्य में

डॉ. समणी संगीत प्रज्ञा

भगवान महावीर ने जिस धर्म का प्रतिपादन किया, वह विशुद्ध रूप में आध्यात्मिक धर्म है। उसका प्रारम्भ बिन्दु है आत्मा का संज्ञान और चरम-बिन्दु है आत्मोपलब्धि या आत्मा का साक्षात्कार। आचारांग के प्रथम अध्ययन में आत्मा की कर्मकृत विभिन्न अवस्थाओं को समझने का दृष्टिकोण दिया है। पर्यावरण की दृष्टि से उसका अध्ययन बहुत महत्त्वपूर्ण है। समता और आत्मतुला - ये दोनों पर्यावरण के प्रदूषण से बचाव करने के महत्त्वपूर्ण साधन हैं। पृथ्वी आदि जीवों के छह निकाय हैं। भगवान महावीर ने कहा- इनके अस्तित्व को अस्वीकार करना, अपने अस्तित्व को अस्वीकार करना है। हिंसा स्वयं प्रमाद है अथवा प्रमाद की निष्पत्ति है। अहिंसक अपने अस्तित्व के प्रति जागरूक होता है। साथ-साथ दूसरे जीवों के अस्तित्व के प्रति जागरूक होना भी है। यह जागरूकता आत्मतुला के सिद्धान्त से विकसित होती है। इसलिए भगवान महावीर ने कहा- आत्मतुला का अन्वेषण करो - **"एयं तुलमन्नेसिं"**।

अहिंसा का सिद्धान्त हिंसा के साधन को समझे बिना समग्रता से नहीं समझा जा सकता। अतः आचारांग में परिग्रह और अपरिग्रह का विशद विवरण उपलब्ध है। **'तुमंसि नाम सच्चेव जं हंतव्वं ति मन्नसि'**

हम सब सापेक्ष हैं। सापेक्षता की अनुभूति होती है तब समन्वय के द्वारा परस्पर संबंध स्थापित होता है। सापेक्षता और समन्वय की दिशा में प्रस्थान अहिंसा का पहला पड़ाव बनता है। हिंसा के द्वारा मांग पूरी हो जाती है, सफलता जल्दी मिल जाती है। यह विश्वास मानव मस्तिष्क में रूढ़ हो गया। क्वचित् सफलता का आभास मिल जाता है, इसलिए उसकी पुष्टि हो जाती है। व्यापक संदर्भ में इसे देखें तो पता चलेगा, कि मनुष्य जाति का सबसे अधिक अनिष्ट हिंसा ने किया है।